وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ ع ۵/۳۸

वोह डूबे[4] और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं[5] और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले[6]

آیاتها ٦ | ١١٤ سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ ٢١ | ركوعها ١

सूरए नास मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ

तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब[2] सब लोगों का बादशाह[3] सब लोगों का ख़ुदा[4] उस के शर से जो दिल

الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾

में बुरे ख़त़रे डाले[5] और दबक रहे[6] वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं

مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾ ع ۶/۳۹

जिन्न और आदमी[7]

दुआ़ए ख़त्मुल कुरआन

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْۤ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً ط اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَانَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ اللَّیْلِ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔

(الجامع الصغير للسيوطي، الحديث: ١٥٧١، ص ٩١، دار الكتب العلمية بيروت وتفسير روح البيان، سورة الاسراء، تحت الآية: ١٠، ج٥، ص١٣٦، كوئٹه)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ مَا فِیْ جَمِیْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا۔

(تفسير روح البيان، سورة الاحزاب، تحت الآية: ٥٦، ج٧، ص٢٣٥، كوئٹه)

تمت بالخير

के साथ ज़िक्र इस लिये है (कि) **अल्लाह** तआ़ला सुब्ह़ पैदा कर के शब की तारीकी दूर फ़रमाता है तो वोह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन ह़ालात से ख़ौफ़ है उन को दूर फ़रमाए, नीज़ जिस त़रह़ शबे तार में आदमी तुलूए़ सुब्ह़ का इन्तिज़ार करता है ऐसा ही ख़ाइफ़ अम्नो राह़त का मुन्तज़िर रहता है, इलावा बरीं सुब्ह़ अहले इज़्तिरार व इज़्तिराब की दुआ़ओं का और उन के क़बूल होने का वक़्त है, तो मुराद येह हुई कि जिस वक़्त अरबाबे करम व ग़म को कशाइश दी जाती हैं और दुआ़एं क़बूल की जाती हैं, मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूं। एक क़ौल येह भी है कि "फ़लक़" जहन्नम में एक वादी है। **3 :** जानदार हो या बेजान, मुकल्लफ़ हो या ग़ैर मुकल्लफ़। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मख़्लूक़ से मुराद ख़ास इब्लीस है जिस से बदतर मख़्लूक़ में कोई नहीं और जादू के अ़मल इस की और इस के आ'वान व लश्कर की मदद से पूरे होते हैं। **4 :** ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने चांद की त़रफ़ नज़र कर के उन से फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! **अल्लाह** की पनाह लो इस के शर से, येह अंधेरी डालने वाला है जब डूबे। (ترمذی) या'नी आख़िरे माह में जब चांद छुप जाए तो जादू के वोह अ़मल जो बीमार करने के लिये हैं उसी वक़्त में किये जाते हैं। **5 :** या'नी जादूगर औ़रतें जो डोरों में गिरह लगा लगा कर उन में जादू के मन्तर पढ़ पढ़ कर फूंकती हैं, जैसे कि लबीद की लड़कियां।

www.dawateislami.net